

स्वादुकंद पुं. (तत्.) 1. सफेद पिंडालू 2. कोबी, केमुक।

स्वादुकर पुं. (तत्.) महाभारतकालीन एक वर्ण संकर जाति।

स्वादुगंधा स्त्री. (तत्.) रक्त शोभांजन, भूमि कुष्मांड।

स्वादुता पुं. (तत्.) 1. स्वाद का गुण, धर्म या भाव 2. स्वादिष्ठता या जायकेदारी, मधुरता।

स्वादुफल पुं. (तत्.) 1. बेर 2. नींबू का पेड़।

स्वादुफला स्त्री. (तत्.) 1. बेर, बदरी वृक्ष 2. खजूर 3. केला 4. मुनक्का।

स्वादुरसा स्त्री. (तत्.) 1. मदिरा, शराब 2. काकोली 3. दाख 4. शतावर 5. अमड़ा।

स्वादुलुंगी स्त्री. (तत्.) मीठा नींबू।

स्वादुविवेकी वि. (तत्.) 1. जो स्वाद में विवेक रखता हो अथवा स्वाद लेने का विवेक रखता हो 2. वस्तुओं के स्वाद में अंतर स्पष्ट करने वाला काव्य. काव्य के स्वाद के आनंद को लेने वाला या जानने वाला।

स्वाद्वि वि. (तत्.) जिसका स्वाद लिया जा सके या लिया जाना हो, स्वाद्वम्ल जो चखे जाने योग्य हो।

स्वाद्वम्ल पुं. (तत्.) 1. नारंगी का पेड़, नागरंग वृक्ष 2. कदंब वृक्ष।

स्वधाधिप पुं. (तत्.) अग्नि।

स्वाधिकार पुं. (तत्.) 1. किसी व्यक्ति या समाज की दृष्टि से उसका अपना अधिकार 2. स्वाधीनता, स्वतंत्रता, आजादी।

स्वाधिपत्य पुं. (तत्.) किसी दूसरे के अधीन न रहकर स्वतंत्र रहने की अवस्था या भाव।

स्वाधिष्ठान पुं. (तत्.) हठयोग के अनुसार शरीर के आठ चक्रों में से दूसरा जिसका स्थान शिश्न का मूल या पेड़ है, यह मूलाधार और मणिपुर के बीच में छह दलों का और सिंदूर वर्ण का माना गया है।

स्वाधीन वि. (तत्.) 1. जो किसी के अधीन न हो, स्वतंत्र, आजाद 2. बिना किसी नियंत्रण या दबाव में काम करने में सक्षम 3. आत्मनिर्भर

4. अपनी इच्छा के अनुसार काम करने के लिए स्वतंत्र 5. जो किसी के बंधन में न हो।

स्वाधीनपतिका स्त्री. (तत्.) काव्य. साहित्य में नायिका भेद का वह रूप जिसका पति उसके वश में रहता हो।

स्वाधीनभर्तृका स्त्री. (तत्.) दे. स्वाधीनपतिका।

स्वाधीनी स्त्री. (तत्.) स्वाधीनता, आजादी।

स्वाध्याय पुं. (तत्.) 1. श्रेष्ठ ग्रंथों का अध्ययन तथा श्रवण 2. वेद की विशिष्ट शाखा जिसका अध्ययन किसी कुल या वंश में परंपरा से चला आ रहा हो 3. किसी विषय विशेष का अध्ययन-निरीक्षण 4. किसी तात्त्विक विषय का गंभीर अध्ययन 5. अपने आप अथवा आत्म तत्त्व का अध्ययन।

स्वाध्यायरत वि. (तत्.) स्वाध्याय में रत रहने वाला।

स्वाध्यायशील वि. (तत्.) स्वाध्यायरत रहने वाला।

स्वाध्यायी वि. (तत्.) 1. स्वाध्याय करने वाला 2. अपने मानसिक या आत्मिक विकास के लिए ग्रंथ/ग्रंथों का नियमपूर्वक अध्ययन करने वाला व्यक्ति, स्वाध्याय शील होने वाला पुं. 1. वेद-पाठ करने वाला व्यक्ति 2. किसी तात्त्विक विषय का गंभीर अध्ययन-अनुशीलन करने वाला व्यक्ति।

स्वान पुं. (तत्.) 1. ध्वनि, आवाज 2. कोलाहल, शोर पुं. दे. श्वान।

स्वाना स.क्रि. (देश.) सुलाना टि. इसका प्रयोग प्रायः कविताओं या गीतों आदि में ही किया जाता है।

स्वानुभव पुं. (तत्.) 1. अपना अनुभव, अपना तजुर्बा 2. ऐसी घटना जो अपने साथ घटित हुई हो, आप-बीती।

स्वानुभूति पुं. (तत्.) 1. अपनी अनुभूति 2. स्व की अनुभूति या ज्ञान, आत्मज्ञान 3. किसी आध्यात्मिक साधक का अपना मानसिक अनुभव, आत्मदर्शन के साधक को होने वाली अनुभूति।

स्वानुरूप वि. (तत्.) 1. अपने अनुरूप, अपने समान या सदृश 2. अपने योग्य, अपने लिए